प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

श्री स्वामिनारायण

सलंग अंक १०१ सितम्बर २०१५ मूल्य रु. ५-०० मासिक

प.पू. लालजी महाराजश्री का १८ वाँ प्रागट्योत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) किंग्सलेन्ड ज्योर्जीया अमेरिका में आई.एस.एस.ओ. के नए चेप्टरों में सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में किलवलेन्ड में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा युवा केम्प आयोजित हुआ था ।(३) पारसीपनी के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(४) पवित्र श्रावण मास में अहमदाबाद मंदिर में प.भ. खीमजीभाई पटेल परिवार (मेडावाला) द्वारा आयोजित पारायण प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री, आरती उतारते हुए प.भ. खीमजीबापा, प.भ. रतीभाई (ट्रस्टी), प.भ. दशरथभाई (ट्रस्टी), प.भ. रमणभाई (ट्रस्टी) तथा वक्ता स.गु. शा. निर्गुणदासजी स्वामी कथा का पान कराते हुए ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ९ ● अंक : १०१
सितम्बर-२०१५

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	महेसाणा की कलशी मा	०६
०४.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से गुरुपूर्णिमा का संदेश	०९
०५.	जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि	१०
०६.	अषाढी तोल	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०८.	सत्संग बालवाटिका	१९
०९.	भक्ति सुधा	२१
१०.	सत्संग समाचार	२५

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

इस वर्ष वर्षा अनियमित होने से किसान आकाश की तरफ देखकर प्रतिदिन भगवान से प्रार्थना करता है. हम सभी भगवान श्री स्वामिनारायण के नामकी धून करें जिससे भगवान प्रसन्न हों, भगवान बड़े ही दयालु है। अपनी प्रार्थना अवश्य सुनेंगे।

आप सभी को आज एक महत्व की वात कहनी है। सर्वोपरि श्रीहरि की उपासना में कभी भी ढीलापन नहीं रखना, उपासना शुद्ध होनी चाहिए।

भगवान के विना अन्य देव की उपासना नहीं करनी चाहिए। यदि दूसरे देव की उपासना करते हैं तो दोष के भागी होंगे। ने पतिव्रतापणुं जाय छे ते वेश्या ना जेवी भक्ति थाय छे। माटे भगवान ने विषे सीताने रुक्मिणी जेवी भक्ती करवी। बीजुं जे साधु सिद्धगतिने पाम्या होय ते समाधिनिष्ठ होय तेनुं पण ध्यान न करवुं। अने सर्वे ने पोतपोताना वर्णाश्रम धर्मने विषे दृढपणे वर्तवुं।

बीजुं आजे अमारी आज्ञा छे तेने जे पुरुष दृढपणे पालशे तेने श्रीकृष्ण नारायणने विषे लक्ष्मीजी तथा राधाजी आदिक जे गोपियु तेना जेवी भक्ति थशे। अने अमारा वचन ने जे नहीं माने तेनी भक्ति वेश्या जेवी थशे. (ग.म. १९)

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

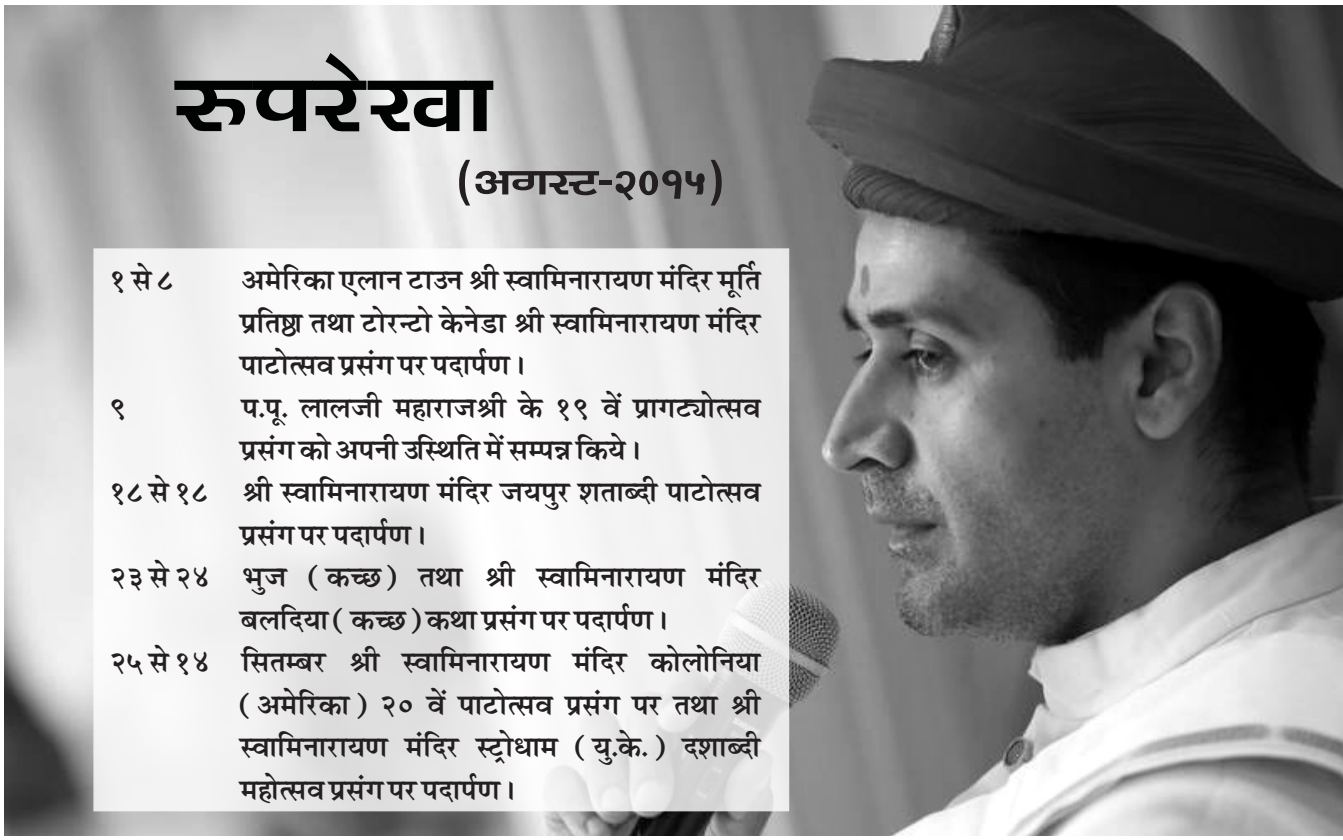

रुपरेखा

(अगस्ट-२०१५)

१ से ८	अमेरिका एलान टाउन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा तथा टोरन्टो केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
९	प.पू. लालजी महाराजश्री के १९ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग को अपनी उस्थिति में सम्पन्न किये।
१८ से १८	श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर शताब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२३ से २४	भुज (कच्छ) तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर बलदिया (कच्छ) कथा प्रसंग पर पदार्पण।
२५ से १४	सितम्बर श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (अमेरिका) २० वें पाटोत्सव प्रसंग पर तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रोधाम (यु.के.) दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

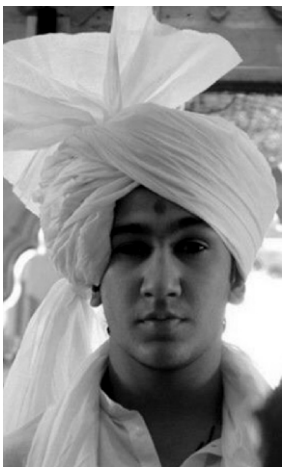

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्ट-२०१५)

९	स्वयं का १९वाँ प्रागट्योत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में संत हरिभक्तों ने धूमधाम से मनाया।
२३ से ३	सितम्बर श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (अमेरिका) २८ वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

महेसाणा की कलशी मा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

भक्त नरसिंह महेता के छट्ठे वंशज भूदर महेता नादरीपुर गाँव में रहते थे । वे बड़े सदाचारी, धर्म-भक्ति परायण थे । त्रिकाल संध्या, बेढाध्ययन, पंचयज्ञादि कर्म करते थे । उनके जीवन से प्रभावित होकर राजनेता उनका आदर करते थे । प्रति तीन वर्ष में आनेवाले कुंभ मेला में तथा अर्धकुंभ मेला में सपरिवार स्नान करने जाते । जब वे यात्रा करने जाते या तीर्थ स्नान करने जाते तो नंगे पांव जाते और वहाँ पर संत समागम करते ।

एक बार हरिद्वार कुंभमेला में हरिद्वार-हरद्वार के नाम पर साधु संतो में विवाद हो गया । वह विवाद हिंसा से उतर गया परिणाम स्वरुप हजारो की मौत हो गयी । इस विवाद में नारदीपुर के भूदरजी महेता भी फंसे हुये थे । संयोगवश भीड़ में वे भी चोट खाकर गिर गये । भगवान दिव्यरुप में आये, उनके माथे पर हाथ फेरते हुये कहे कि अब आपकी यात्रा पूर्ण हुई आपकी ऐसी तीर्थ यात्रा की टेव से हम प्रसन्न है, आप अपने घर लौट जाईये, आपको अब कुंभ मेला में आने की आवश्यकता नहीं है । आपके घर में गंगाजी स्वंय कलश के रुप में पुत्री का अवतार होगा भगवान वाणी सुनकर उन्हीं को याद करते हुये, अपने घर आये । समय वीतते पत्नी प्रेम कुंवर से संवत् १८०७ में ज्येष्ठ शुक्ल-७ गंगा सप्तमी को प्रथम पुत्री का जन्म हुआ । उनका नाम गंगाकुंवर रखा गया । (वेही जेतलपुर में रही और श्रीहरि की ''मां'' गंगामां के नाम से प्रतिष्ठित हुई - यह गत अंक में प्रकाशित हुआ है) । संवत् १८९६ आश्विन कृष्ण-१३ (धनतेरश) को दूसरी पुत्री का जन्म हुआ । उनका नाम कलश (कुंभ मेला) के स्वरुप में - कलशकुंवर रखा गया । तीसरी पुत्री रंणीयात के नाम से हुई । दो पुत्र हुए (१) जोईताराम (२) नानालाल ।

अब पुत्री कलशकुंवर की लिखती है । भुदरजी महेता की बडी पुत्री गंगाकुंवर की तरह कलशकुंवर पुत्री भी पवित्र-धर्मनिष्ठ सदाचारिणी गुणवती थी ।

बाल्यावस्था से ही पूजा पाठ-देव दर्शन-बड़ो का

आदर सत्कार-माता पिता की सेवा मे परायण रहती थी। कलश कुंवर ही कुंभ अर्थात् - कलश - कुंभ मेला के अंश से अक्षरधाम के मुक्त से जन्म लिया था। बड़ी पुत्री गंगा कुंवर का विश्वनाथ रावल के साथ विवाह होने के बाद घर की उत्तरदायित्व कलश कुवंर के ऊपर आ गयी। एक दिन माणसा गाँव में चचेरे भाई के विवाह प्रसंग पर महेसाणा के बालालाल दवे के पुत्र नथुराम दवे को देखकर उन्हीं के साथ विवाह के लिये इच्छा व्यक्त की और १६ वर्ष की उम्र में उनकी शदी माता-पिताजी अनुमति से संपन्न हो गई।

वि.सं. १८३३ अक्षय तृतीया को कलशकुंवर का विवाह संस्कार महेसाणा के नाथुराम दवे के साथ संपन्न हो गया। भुदरजी नागर जाति के तथा नथुराम औदिच्य ब्राह्मण थे। नागरजाति के ब्राह्मणो ने विरोधकिया तथा अपनी जाति से विमुख कर दिया परिणाम स्वरुप दोनों परिवार वर्षो तक समाज से बाहर थे, तब भूदर महेता करजीसण में आकर रहने लगे।

जाति से बाहर होने के बाद कलशकुंवरबा अति कठिन व्रत उपवास करके देह का दमन किया। महेसाणा में नथुराम दवे की अच्छी प्रतिष्ठा की। नथुराम आध्यात्मिक आस्थावाले थे। कलशकुंवर के विवाह के बाद इस परिवार की धनसमृद्धि - प्रतिष्ठा चारो दिशाओं में फैल गई थी।

कुशल कुंवरबा की बड़ी बहन ''गंगाबा'' जेतलपुर वालों के योग से उद्धव संप्रदाय की अनुयायी हो गयी। भगवान स्वामिनारायण ने जेतलपुर में महाविष्णुयाग किया उस समय ३ महीने तक सेवा में रही तब वे श्रीहरि का अनन्य आश्रित बन गयीं। बाद में महेसाणा आने के लिये आमंत्रण दीं। श्रीहरि ने कहा कि जब सिद्धपुर की यात्रा में आऊँगा तो महेसाणा अवश्य आऊँगा, आपके यहाँ भोजन भी करुँगा। कुशल कुंवरबा महेसाणा आकर श्रीहरि के प्रगटपना की महिमा का गुणगान किया। इससे प्रभावित होकर वहाँ के लोगों को श्री स्वामिनारायण भगवान के दर्शन की अत्यंत उत्कंठा हो गयी। महेसाणा की कलश कुशलबा (जिन्हें अपभ्रंश से ''कशलीबा'' कहा जाता है। कलश अर्थात् कुंभ-उसी के प्रतीक रुप में कलशकुंवर नाम पडा था। नागर जाति के लोगों में लड़कीयों के नाम में कुंवर लगाया जाता है। इस लिये जूनागढ की नरसिंह महेता की बेटी को ''कुंवरबा'' कहते थे।

कलशकुंवरबा को नथुराम दवे से सां. १८४३ - कार्तिक शुक्ल पूनम देव दीपावली को एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ था। उसका नाम बेचरदास रखा गया।

कलशकुंवरबा को दो पुत्र पैदा हुए। पति नथुराम दवे की सं. १८४६ आश्विन शुक्ल-दशमी को मृत्यु हो गयी। पुत्र छोटा था। घर की तथा व्यवहार की अनेक समस्याओं का सामना करते हुये भगवान स्वामिनारायण का आश्रम नहीं छोडी।

भगवान स्वामिनारायण पांचसो परम हंसो के साथ सिद्धपुर की यात्रा के लिये संवत १८६१ माघ दशमी को निकल पडे। कलशीबा के घर पधारे। श्रीहरि तथा पांचसो परमहंसो को घी से तरबोर खीचडी खिलाई। वहीं पर रात्रि निवास भी किये। दूसरे दिन प्रातःकाल सिद्धपुर जाने के लिये तैयार संतो का तथा महाराज को वासी मुंह से खिचड़ी की दतुअन करवाई थी। यह प्रसंग संप्रदाय में प्रसिद्ध है।

भगवान स्वामिनारायण कलशीबा के घर कुल तीन बार पधारे थे। इसके अलांवा अनेक उत्सव भी किये थे।

कलशीबा की भक्ति प्रवाह दिन प्रतिदिन बढता ही गया। अगल बगल के गाँव में घूम-घूम कर सत्संग को करवाई थी। संवत १८८५ को महेसणा में प्लेग का रोग फैला था। उससे बचने के लिये दूसरे गाँव चले गये थे। कलशी बा पुत्र-घर की सामान लेकर सिद्धपुर से उत्तर तरफ पीपलज के ठाकुर साहब ने १० बीघा जमीन दान में दी थी, वह जमीन राजपुर गाँव में थी वही पर आकर रहने लगी। १ वर्ष का समय वहाँ पर बीताकर सिद्धपुर के विस्तार में प्लेग के रोग का सर्वत्र फैलाव होने से कलशीबा अपने पुत्र के साथ सरस्वती नदी के किनारे अपने खेत में कुटिया बनाकर रहने लगी। रोग का प्रभाव इतना अधिक हो गया कि वहाँ भी वे उससे बच नहीं सकीं और संवत् १८८६ में फाल्गुन शुक्ल-११ को उसी खेत में पीपलवृक्ष के नीचे शरीर का त्याग करदीं। उसी समय श्रीहरि विमान लेकर लेने आये। कलशी बा ७० वर्ष की उम्र में अक्षरनिवासीनी हुई थी। उस समय पुत्र बेचरदास की उम्र ४० वर्ष की थी।

कलशीबा का वंश आज भी महेसाणा में विद्यमान है। उनके वंशज वर्षो तक जोषी की खड़की में रहते थे। कलशीबा के पुत्र बेचरदास तथा उनके पुत्र मोहनलाल दवे उनके पुत्र रघुपतिराय दवे उनके पुत्र मनुभाई दवे पुत्र जयश्रीबहन तथा उषाबहन दो पुत्रियां है। मनुभाई अब पांडेचेरी आश्रममें रहते हैं। मनुभाई का पुत्र धनंजय दवे तथा उनकी पत्नी ममता बहन महेसाणा में रहती है। उन्हें आर्जव नामका पुत्र है। जिसकी २१ वर्ष की उम्र है। कोलेजमें पढता है हाईवे पर स्थित अपने मंदिर में प्रतिदिन दर्शन करने आता है। पुत्रियां उषाबहन का विवाह गेरिता में तथा जयश्रीबहन का विवाह ऊँझा में प्रवीणचंद्र आचार्य के यहाँ किया गया है कलशीबा के वंश का परिचय सिद्धपुर के गोरदादा तथा कलशीबा की छोटी बहन कजीयात बहन के वंशज अशोकभाई सोमदास महेता (उनावा गाँव में रहती है एडवोकेट हैं ? जिन्होंने नागरजाति में पी.एच.डी. डोक्टर डिग्री प्राप्त की है। भारत भर के नागर जाति के लोग महेसाणा, पाटण तथा अमदावाद के नागर जाति के संशोधकों से यह जीवन गाथा उपलब्धहुई है। इस विषय में कलशीबा के वंशजो से प्रत्यक्ष मिलकर जानकारी लिये हैं। इसलिये हमें इसका पूर्ण संतोष है। इसीलिये सत्संग में मुक्तराज महेसाणा की कलशीबा की जीवन गाथा लिखे हैं। इसके साथ ही जेतलपुर की गंगाबा की जीवन गाथा खोजते-खोजते कलशीबा की जीवन कथा मिल गई है।

कलशीबा के पति नथुराम दवे का गोत्र भारद्वाज त्रिपर्व, शुक्ल यजुर्वेदी, माधादिनी शाखा, चामुंदा कुलदेवी, महोदर गणपति, औदिच्य सहस्त्रब्राह्मण, विरेश महादेव, आशित भैरव, सोमसर्व, इस तरह के पावन प्रमाण हैं।

समस्त सत्संग को सूचना

समस्त सत्संग को बताते हुये आनंद हो रहा है कि साधु संशयविमोचकदासजी गुरु स.गु. ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदासजी वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश के नागरिक संत थे। अब वे अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश में रहते हैं इसलिये श्री नरनारायणदेव के नागरिक हो गये हैं।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से गुरुपूर्णिमा का संदेश

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

सभीने आज के दिन श्री नरनारायणदेव के दर्शन किये । बहुत आनंद हुआ । हम सभी के उपास्थ या गुरु समान श्रीजी महाराज का स्वरुप श्री नरनारायणदेव है । सत्संग का जो भी उत्तम कार्य होता है उसमें श्री नरनारायणदेव का ही सहयोग है । क्योंकि अपनी स्वयं की चालाकी से कार्य करने का प्रयत्न करने पर तो कार्य बिगड ही जायेगा । आखरी वाला श्री नरनारायणदेव महोत्सव धूमधाम से मनाया गया । आज भी कई लोग याद करके कहते हैं कि उत्सव बहुत सुंदर था । तो क्या ऐसे महान उत्सव केवल आचार्यश्री, संतो या हरिभक्तों से होना संभव है ? क्योंकि ऐसे उत्सवों की सफलता का कोई कारण है तो मात्र श्री नरनारायणदेव । कार्य करने वाले देव है हम तो निमित्त मात्र है । और यश भी हमें ही मिलता है ।

मुझे कोई उपदेश नहीं देता है । कार्य किया है और बहुत सारा कार्य बाकी है । सभी लोग साथ मिलकर करें तो कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी । किसी को भी प्रसन्न करने के लिये कार्य नहीं करना चाहिए परंतु देव को प्रसन्न करने के लिये सत्संग की प्रवृत्ति करनी चाहिए । सम्मान में नहीं निर्मानी होने में में मजा है । नरनारायणदेव के प्रताप से विश्व में सत्संग का व्याप बढा है । आचार्य का पद सत्संग की सेवा हेतु है । पद पर विराजमान होकर ऊँची गादी पर बैठना ऐसा अर्थ तो होता ही नहीं है । वास्तव में पृथ्वी का आसन ही सबसे पवित्र आसन है । महाराजने इसी पृथ्वी पर ही अविरत विचरण करके पृथ्वी को पावन करने के साथ साथ सत्संग की नीव डाली है । उच्च आसन पर बैठने वाले को कोई नीचे भी उतार सकता है परंतु पृथ्वी जैसे नीचे आसन पर बैठने वाले को कोई भी नीचे नहीं उतार सकता है । हम किसी नये शिष्य को नही बनाते । हमें कुछ भी नया नही करना है । महाराजने हम सभी को जो राह बतायी है उसी राह पर चलना है । श्रीजी महाराज का वचन सर्वोपरी है । महाराज के वचनो के सर्वोपरी है । हम बहुत सुखी है कि यहाँ पर हेतु कोई खींच-तान नहीं है । बाकी हम सभी लोग जानते हैं कि जिसने भी महाराज के वचनो के अवहेलना भी है, आचार्य पद की गरिमा नहीं समजी, या संतो की गरिमा नहीं समजी है वहाँ अराजकता का माहोल उत्पन्न हुआ है । हम मानते हैं कि चान्द्रायण या चातुर्मास या तप करने से आत्याधिक फलकारी श्रीजी महाराज के वचनो का पालन करना है । जहाँ महाराज के वचनों की मर्यादा है वहगाँ सुख, समृद्धि तथा सांति अवश्य है । महाराज के वचनो का पालन ही उन्नति प्रेरक है ।

बहुत दूर-दूर से हरिभक्त गण आये है तो विशेष कुछ अधिक ना कहते हुए आप सभी के परिवार सहित सभी का मंगल हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि

(दलपत शृंखला-६)

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला
(अहमदावाद)

मूली मंदिर में जन्माष्टमी को कुसुमकवि की सभा में दलपतराम जीते थे । उनका काव्य विजय हुआ था । उसी दिवस से दलपतराम संप्रदाय में कवि के स्वरुप में विख्यात हो गये । काव्य विजय से अयोध्याप्रसादजी महाराजने ताबड़ तोड उन्हें पढ़ाई के लिए अहमदाबाद भेजने का फैसला किया ।

उत्सव के समय दलपतराम बढवाण आये तब संस्कृत पढ़ने के लिये अहमदाबाद जाने की तैयारी में लग गये । संवत १९०१ (ई.स. १८४५) को भादो शुक्लपक्ष सप्तमी का अहमदाबाद आने हेतु नीकल गये । उसी भादो की जलझीरणी एकादशी को अहमदाबाद पधारे ।

उस समय मठ तथा मंदिरो की उच्च शिक्षण की महा पाठशालायें हुआ करती थी । अहमदाबाद मंदिर में विद्यार्थीओं के साथ दलपतराम भी रहने लगे । कोठार से मिलनेवाले राशन में से भोजन बनाते थे । महंत वृंदावनदासजी तथा वैराग्यमूर्ति निर्गुणदासजी स्वामी दलपतराम के सहाध्यायी थे । माहेश्वर भट्ट के पुत्र जेठाराम भी उनके साथ ही अभ्यास करते थे । सभी सहाध्यायी लोग अपने जीवन के पांच दशक तक भी दलपतराम काभूले नहीं थे ।

उनके मृत्यु लोक की विदाय के समय पर सप्ताह पूर्व फाल्गुन महिने के कृष्ण एकादशी को स्नान करके स्वच्छ हुए । श्वेत वस्त्रों को पहनकर पांच दशक पुराने स्नेही सहाध्यायी त्यागमूर्ति निर्गुणदासजी के साधु मंडल को अपने घर आमंत्रण दिया । सभी संतो का पूजन अर्चन किया । पुष्प माला पहनकर ''रे सगपण हरिवरनुं साचुं'' कीर्तन गाया । बस उसी कीर्तन को सुनते-सुनते कवीश्वर दलपतरामने संप्रदाय की अंतिम विदाय ली ।

माली जिस प्रकार सुगंधिपुष्पों की टोकरी लेकर मार्ग पर से जाता हे तो उन फूलों की सुगंधचारो तरफ प्रसरजाती है उसी प्रकार मंदिर में अभ्यास करते हुए अहमदाबाद शहरमें उनकी काव्य कलारुपी कीर्ति की सुगंधफैलने लगी । मंदिर की पड़ोश में बेचर माणकीवाला नामक घनाढ्य वैष्णव परिवार की हवेली थी । माणकीवाला की गादी पर वर्तमान में साहित्यप्रेमी तथा काव्य प्रेमी छोटाभाई शेठ थे । प्रत्येक दिन सुवर्ण का एकबार दान करके ही भोजन ग्रहण करते थे । बहुत पहोपकारी भी थे । वे वल्लभ संप्रदाय के थे परंतु स्वामिनारायण मंदिर के साथ पड़ोशी धर्म के नाते अच्छा व्यवहार भी रखते थे । उन्हें जब ये ज्ञात हुआ कि मंदिर में कोई कवि आये है जो शीघ्र काव्य करते हैं इसी लीए अश्वनी कृष्ण पक्ष की एक संध्या सभा में छोटाभाई शेठने आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी से पूछा, ''आप के पास सरस्वती प्रसन्न कोई कवि पधारे हैं ऐसा सुना है ।'' आचार्यश्रीने दलपतराम को बुलाकर उनकी पहचान करवायी । शेठने दलपतराम से कहा, ''कविराज कोई शीध्र काव्य सुनाई ये ।'' दलपतरामने कहा आप विषय बताइये उसी पर काव्य सुनायेंगे । शेठने कहा, ''इस सभा

का वर्णन करीये,'' आदेश प्राप्त होते ही दो-चार क्षण में ही कवि की काव्य धारा फूट पडी।

"मानसर के समान मानहु विराजमान,
संत की सभा सुजान धर्मवंशी पास दे.....
कहे दलपतराम सुना छोटालाल भ्रात
धर्मद्वेषी विमुख कुमुदिनी उदाय है"

काव्य मर्मज्ञ छोटाभाई शेठने इस दोहे में अलंकार दोष बताया तो तुरंत ही दलपतरामने नया दोहा प्रस्तुत किया। तथा काव्यतर्क से उसमें से अलंकार दोष को दूर किया।

छोटालाल हस पडे। दलपतराम के काव्यतर्क से आश्चर्यचकित तथा आनंदित हुए।

कवि प्रेमी शेठने कवि दलपतराम की बहुत प्रसंसा की।''शाबाश कविराज ! शाबाश !'' और आचार्यश्री से कहा कि, ''कई कविओं को देखा लेकिन अद्‌भुत तर्कशक्ति की प्रतिभा सभर कवि आज तक नहीं देखा। स्वामिनारायण संप्रदाय की ये शोभा, सम्मान है।''

इस प्रकार दलपतराम की काव्यकला की कहानी शहर भर में फैलने लगी। अहमदाबाद में लाखा पटेल की पोल में एक शेठ की पोल है। उस में एक गिरधर लालभाई ध्रुव रहते थे। वे अच्छे सत्संगी तथा काव्य रसिक भी थे। मणकीवाले शेठ से उन्होंने दलपतराम के विषय में सुना तो वे प्रसन्न हुए। लाखा पटेल की पोल में साराभाई बापभाई करके एक वृद्ध भी रहते थे। वे भी साहित्य प्रेमी तथा अच्छे कवि थे।

एक बार गिरधरलाल ध्रुव के साथ दलपतराम साराभाई के घर गये। काव्य वार्ता हुई। दलपतराम की कविताएं सुन वे प्रसन्न हुए। अपनी कविताएँ भी सुनाई। इस प्रकार अयोध्याप्रसादजी समान समर्थ आचार्यश्री, वासुदेवानंद जैसे ब्रह्मचर्य परायण ब्रह्मचारी, निर्गुणदासजी जैसे त्यागमूर्ति सदाध्यायी का संत पाकर दलपतराम के सत्संग में तथा प्रतिभा में वृद्धि का स्त्रोत बना। एक बार दलपतराम नगरशेठ हेमाभाई के साथ भी काव्य सभा में गये थे। इस प्रकार अहमदाबाद के गुणिजनो में दलपतराम के गुण प्रसरने लगे।

अहमदाबाद में अभ्यास के साथ-साथ आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के साथ शीध्र कविता का दलपतराम का काव्य विनोद प्रतिदिन अविरत चलता ही रहा। आचार्यश्री स्वयं एक अच्छे कीर्तनकार तथा काव्य प्रेमी थे।

एकबार मंदिर में शयन के समय आचार्यश्री भी पधारे। वहाँ वैष्णवानंद ब्रह्मचारी, लूला साधु कृष्णचरणदासजी तथा दूसरे संत गण भी उपस्थित थे। कीर्तन गाये जा रहे थे तथा शयन आरती का इंतजार हो रहा था। उस समय दलपतराम भी श्री नरनारायणदेव के शयन के दर्शन हेतु मंदिर में पधारे। दलपतराम को देख एक संतने कहा, ''आ गए कविवर ! जहाँ न पहुंचे रवि, वहाँ पहुंचे कवि।'' यह सुनकर साधु कृष्णचरणदासजीने प्रस्न किया कि, ''क्या रवि से भी कवि बड़ा होता है।'' तो वैष्णवानंद ब्रह्मचारीजीने दोहे का चरण गाकर उत्तर दिया.

"यह नरनारायण बड़ा, इनेस बड़ा न कोई।"

दलपतराम संतो की काव्य मीमांसा तथा विनोद को परख गये। तुरंत आचार्यश्री से विनती करके कहा, आज्ञा हो तो मैं भी कुछ कहुं। ''आचार्यश्रीने संमति दी। दलपतरामने दूसरा चरण प्रस्तुत किया।

''महाराज हुं में बड़ो दुपच्छ वत्सर होई (दो वर्ष और बे सप्ताह का)

''देखिए महाराजश्री, मेरे जन्मे के बाद (दलपतराम का जन्म संवत १८७६ में हुआ था) दो वर्ष तथा चार सप्ताह प्रश्चात श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा हुई है। इस प्रकार में दो वर्ष और एक महिना में (कवि) उनसे बड़ा हुआ की नहीं ?''

ऐसे निर्दोष काव्यविनोद से आचार्य महाराजश्री तथा संतगण बहुत प्रसन्न हुए। सभी को लगा की ऐसे कविरत्न जहाँ रवि भी नहीं पहुंच सकते वहाँ पहुँचने की प्रतिभा है।

नोंट : इस लेख में दलपतराम के पारिवारिक तथा सामाजिक प्रसंगो का समावेश नहीं किया गया है। इस में उनही प्रसंगो का समावेश किया गया है जो स्वामिनारायण सत्संग और उस समय विद्यमान आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज तथा समकालीन संतो के साथ सानिध्य और सहकार से जुड़े थे।

अषाढी तोल

- महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी (टोरडा)

स.गु. गोपालानंद स्वामी के चमत्कार आजभी देखने को मिलते हैं । गोपाललालजी श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा गोपालानंद स्वामी के सानिध्य में टोडा में आषाढी पूनम की रात्रि में मंदिर के महंत स्वामी तथा गाँव के लोग मंदिर में एकत्रित होते हैं । इसके बाद प्रत्येक अनाज को तथा लाल मिट्टी को (मनुष्यों के लिये) काली मिट्टी (पशुओं के लिये) सोने के तराजू पर तोला जाता है ।इसके बाद इन वस्तुओ को भगवान के अलंकार के साथ बांधकर बाद में सभी को मिट्टी के घड़ें में ढककर रख दिया जाता है । बाद में तराजू तथा बटरखरा को उसी धडे के उपर रख दिया जाता है । इसके बाद उस घड़े को राधामां के साडी से बांधदिया जाता है । दूसरे दिन प्रातः काल अर्थात् आषाढ कृष्ण-७ को गाँव के लोग मंदिर में आते हैं । आधा घन्टे तक भजन-कीर्तन धून- के बाद घड़े को बाहर लाकर मंदिर के गुंबज के नीचे रख दिया जाता है । बाद में घड़ा का मुख खोलकर सभी पोटली बाहर निकाली जाती है । इन सभी पोटलियों को पुनः तौला जाता है । जिन वस्तुओं का पाक अच्छा होने वाला होता है उन वस्तुओं के वजन में वृद्धि हो जाती है । जिस में पाक कम होने वाला होता है वह कम हो जाती है । जिस में कम-बेसी नही होने वाला होता है उसका माप उतना ही रहता है । इस तरह प्रतिवर्ष आषाढी तोल का कार्य किया जाता है । व्यापारी तथा किसान इसका समाचार जानने के लिये आतुर रहते हैं । इस परिणाम के आधार से सभी लोग अपनी खेती तथा व्यापार करते हैं ।

इस वर्ष आषाढी तोल का परिणाम

१.	उरदी -	बराबर
२.	लालमटी -	बाजरी का आठ कण अधिक (मनुष्य के लिये)
३.	रसकस -	बाजरी का २५ कण कम
४.	कालीमाटी-	बराबर (पशुपक्षी के लिये)
५.	धान-	बाजरी का १४ कण कम
६.	मकाई-	बाजरी का ३ कण कम
७.	कपास-	बाजरी का १० कण कम
८.	गेहूँ-	बाजरी का १० कण
९.	बाजरी-	बाजरी का २० कण कम
१०.	चना-	बाजरी का २१ कण कम
११.	मूग-	बाजरी के १२ कण अधिक

नोट - इस वर्ष के आषाढी तोल के अनुसार बरसात अधिक पड़ने की संभावना तथा खरीफ की पाक अच्छी होने की संभावना । इसलिये सभी किसानो में आनंद की लहर है ।

संप्रदाय का गौरव

श्री नरनारायणदेव देश उत्तर गुजरात के माणेकपुर (माणसा) गाँव के श्री नरनारायणदेव के निष्ठावाले प.भ. बहेचरभाई शंभुदास पटेल के पुत्र चि. सुनील अमेरिका के एल.ए. में आयोजित ११७ देश की समर ओलम्पिक गेम में मंद बुद्धि के बालकों की सोफ्ट बोल की गेम में ओस्ट्रेलिया को हराकर गोल्ड मेडल जीतकर अपने भारत देश तथा संप्रदाय की गरिमा को बढाया है । अपने १७ राज्यो में से केन्द्र सरकार के खेलकूद के मंत्रालय ने सुनील को पसन्द किया था । प.पू. लालजी महाराजश्रीने ता. ९-८-१५ को अपने १९ वें जन्म दिन के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में श्री सुनील का संमान करके उनके उत्तरोत्तर प्रगति के लिये श्री नरनारायणदेव को प्रार्थना करके आशीर्वाद दिया हैं ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री नरनारायणदेव समक्ष उत्सव

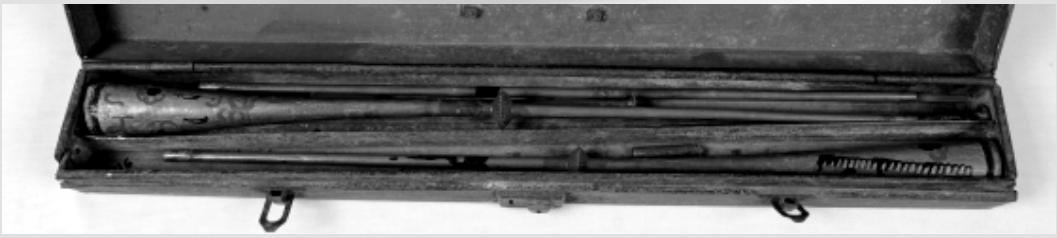

अपने वैष्णव संप्रदाय में व्रत के दिन उत्सव मनाने की दिव्य परंपरा है। भक्त भगवान को श्रद्धा-भक्ति से श्रृंगार, भोग, पूजा, कीर्तन इत्यादि का निवेदन करता है। एकादशी, अष्टमी, इतयदि व्रत के दिन भगवान के समक्ष मृदंग, ताल, ढोल, नगारे जैसे वाद्ययंत्रो से भजन कीर्तन होता है। अमदावाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की जब से प्रतिष्ठा हुई तब से इस तरह का उत्सव चला आ रहा है। जिस की परंपरा आज भी यथावत है। इस उत्सव मंडल द्वारा कार्तिक पूनम को पूरी रात उत्सव होता है। इसी तरह जल झीलणी एकादशी को अहमदाबाद मंदिर में श्री गणपतिजी के समक्ष तथा गणपतिजी की शोभायात्रा में वाद्ययंत्रो के साथ उत्सव करने की परंपरा चालू है। उस समय उत्सव में जो भी वाद्ययंत्र उपयोग में आते - जिस में - मृदंग, भूंगल, उत्सव के पद वाली पुस्तक श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. ३ में दर्शनार्थ रखी गई है।

- प्रफुल खरसाणी

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अगस्त-२०१५

रु. २,५०,०००/-	धर्मकुल के एक निष्ठावाली बहन की तरफ से	रु. ५,१००/-	गोहिल मीनाबहन मधुभा - भरुच
रु. ११,०००/-	बबुबहन बेचरदास पटेल - डांगरवा	रु. ५,०००/-	कौशिकभाई जोषी - अमदावाद
रु. ११,०००/-	धीरजभाई के. पटेल - अमदावाद	रु. ५,०००/-	प्रवीणभाई गोकलभाई देसाई - नारणपुरा
रु. ६,१००/-	श्रीजी पेट्रोल पंप चौधरी परिवार - बालवा	रु. ५,०००/-	कानजीभाई हीरजीभाई पटेल कृते शैलेषभाई तथा प्रवीणभाई - ट्रेन्ट

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अगस्त-२०१५)

ता. १-८-१५	पार्थ जनककुमार पटेल - लवारपुरवाला
ता. २-८-१५	बलदेव स्वामी तथा हरजीवन स्वामी गुरु गवैया स्वामी की प्रेरणा से - श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल - नरोडा, आदिश्वरनगर
ता. ९-८-१५	श्रेयषभाई जशवंतभाई के. मोदी - ममताबहन का संकल्प पूरा हुआ - उसके निमित्त थलतेज
ता. २३-८-१५	मगनभाई केशवजीभाई चौहाण कृते काशीबहन राजेश, हर्षद, हितेष - माणामोरावाला परिवार - नवा वाडज
	सायंकाल : महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर जुंडाल - कृते ममताबहन तथा नीताबहन तथा हंसा बहन
ता. ३१-८-१५	पटेल महेशकुमार महेन्द्रभाई पुंजलदास - डांगरवावाला न्यु राणीप श्री नरनारायणदेव ने संकल्प पूरा किया उसके निमित्त

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर

100

शताब्दी महोत्सव

16-18 अगस्त 2015

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, જયપુરના શતાબ્દી મહોત્સવ પ્રસંગની તસવીરો...

સૌજન્ય

પ.ભ.નરેન્દ્રભાઈ અમૃતભાઈ પટેલ હ.વિનય
પ.ભ.મનુભાઈ બાપુલાલ પટેલ હ.હરિકૃષ્ણ
પ.ભ.મનુભાઈ મૂળચંદભાઈ પટેલ હ.સત્યમ
પ.ભ.સુભાષભાઈ અંબાલાલ પટેલ હ.અક્ષય
પ.ભ.ઠાકોરભાઈ સોમચંદભાઈ પટેલ
હ.ઘનશ્યામભાઈ

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

बात है विवेक की

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

''विवेक दसवी निधिहै ।'' इस वाक्य को हमने कईबार सुना है। ब्रह्माजीको नवनिधितो कुबेर के भंडार के समान प्रदान थी । निधिअर्थात् तिजोरी । जिस में उन्होंने सुवर्ण, हिरा-मोती आदि द्रव्य भरकर निर्भयता प्राप्त की । परंतु दसवाँ निधिजो कि ''विवेक'' है उसे पृथ्वी के मनुष्यों को प्रदान किया। आशय मात्र इतना था की इस निधिद्वारा मानवजात अपने तमाम सद्‌गुणो को संभालकर सुरक्षित रख शके। और हम यह अच्छी तरह से जानते है कि जिसके पास विवेक रुपी निधिनहीं है उसके पास बाकी सारे सद्‌गुणभी ना के बराबर होते हैं।

संतो, शास्त्रों मे प्रथम विवेक की ही बात होती है। जिस प्रकार हमें यदि गाड़ी खरदनी है तो प्रथम उसे रखने के स्थान की चिंता करनी चाहिए जिससे गाड़ी को सुरक्षित रखा जा सके। उसी प्रकार प्राप्त हुए सद्‌गुणों के लिए विवेकरुपी तिजोरी व्यवस्था न हो तो लंबे समय तक सुरक्षित नहीं रख सकते।

इसीलिए इष्टदेव स्वामिनारायण भगवानने अपने भक्तजनों के लिए शिक्षापत्री की रचना स्वयं की। इसी छोटी पुस्तिका में विवेकरुपी सागर समाया है। वचनामृत में जो आज्ञाएं की गयी हैं वे भी विवेक की पुष्टिहेतु ही की गयी है। विवेक या अविवेक की प्राप्ति का आधार हमारे आस-पास का वातावरण है। बालक छोटा होता है तब उस पर उसके कौटुम्बिक वातावरण की सम्पूर्ण असर होती है । विद्या अभ्यास के प्रारंभ से स्कूल, शिक्षक, तथा सहअभ्यासी मित्रो के व्यवहार का भी असर होता है । यह दो व्यवहार ऐसे है जिसका असर हमारे जीवन के विवेक-अविवेक पर पड़ता है। संग-सहकार के अनुसार उसमें वृद्धि की कमी वैसी होती रहती है । विवेक का महास्त्रोत सत्संग से प्राप्त होता है।

''विनु सत्संग विवेक न होई,
रामकृपा बिना सुलभ न सोई।''

चिरकाल तक विवेक की प्राप्ति के दो मार्ग है, पारिवारिक वातावरण तथा शिक्षण। क्योंकि परिवार में माता-पिता बुजुर्ग तथा शिक्षण में शिक्षागुरुओं के द्वारा दिये गये संस्कार की छाप सीधे या किसी भी स्वरुप में बालक के मानस पट पर पड़ता ही है। सदैव वाणी से व्यवहार की असर अधिक बलवान तथा चिरस्थायी है। क्योंकि आचरण के अभाव मे वाणी से उतैजना तो प्राप्त होती है परंतु वह स्थायी नहीं होती।

एक राजा के राज्य की प्रजा में अंदर अंदर बहुत कलह था। राजाने बहुत प्रयत्न किया उसे दूर करने का। परंतु सफलता प्राप्त नहीं हुई । राज्य गुरुने सलाह दी कि छोटे बच्चो को जन्म के साथ ही अगर विवेक का शिक्षण दिया जाय तो भविष्य में राज्य में स्थायी शांति की स्थापना की जा सकती है। इसी पवित्र उद्देश्य से राज्य में ''विवेक विद्यालय'' की स्थापना की गयी । विद्वान पंडितो को शिक्षको के रुप में नियुक्त किया गया । विद्यालय की दिवालो पर विवेक के सुंदर वाक्यों को लिखा गया । पंडित शिक्षकोने विद्यार्थिओ को विवेक का पाठ पढ़ाना आरंभ किया । कुछ समय तक तो सबकुछ ठीक चला परंतु पांच वर्ष बाद बालको में अविवेक के प्रमाण में वृद्धि होने लगी। जांच करने पर पाया गया कि बच्चों को विवेक का उपदेश देनेवाले शिक्षको के जीवन में विवेक का अभाव होने के कारण बच्चों पर विवेक के उपदेश की असर दूर होने लगी।

किसी भी व्यक्ति के आचरण से अधिक असर होती है उपदेश से नही । इसीलिए विवेक को आचरण में समाहित करने वाले संतपुरुषों का संग करने से ही विवेक की प्राप्ति होगी। सद्‌गुण मात्र का निवास स्थान विवेक है । जिस में विवेक न हो उसमें सद्‌गुण स्थायी वास नहीं कर सकते।

सज्जनो ! हम भाग्यशाली है कि हमें ऐसे पवित्र सत्संग की प्राप्ति हुई है। हमारे नंद संतोने तथा सत्संगने हमें विवेक के सागर स्वरुप सत्तशास्त्रों की संपत्ति प्रदान की है। इसीलिए आनेवाली पीढी में विवेकरुपी निधिमें सद्‌गुणों की सुरक्षा हेतु अपने बच्चों को सत्संग का योग प्रदान करें यही हमारा प्रथम कर्तव्य है।

●

यह कार्य तो आशीर्वाद से हुआ।

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

भगवत् कृपा से हम विनय, नम्रता, निष्काम, सेवा, परोपकार, त्याग आदि गुणों से पूर्ण हो लेकिन इन सब की प्रसंशा हम स्वंय अपने मुख से करने लगे तो ऐसे गुण दोष रुप बन जाते हैं। क्योंकि आत्मप्रशंसा अधोगति का प्रथम चरण है। स्वयं में गुण हो, और स्वयं कोई कार्य अच्छे से करने के बावजूद भी उसका यश दूसरों को देने वाला व्यक्ति ही विनयी तथा विवेकी होता है सभी के लिए यह कार्य संभव नहीं है।

आज के युग में किसी भी कार्य का बड़ा-बड़ा प्रचार किया जाता है। परंतु कार्य सिद्धि के अंतमें आवश्यक ऐसी विनम्रता तथा विनय का विस्मरण हो जाता है। हमारे इष्टदेवने शिक्षापत्री में स्पष्ट इस बात का इनकार किया है कि, ''अपने मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।

इस विषय को समझाने के लिए रामायण के प्रसंग का उपयोगी दृष्टांत समझते है। यह बात समझने, विचारने तथा आचरण के योग्य है। इसीलिए अत्यंत ध्यान से इसका पठन करिए। बात इस प्रकार है, जब श्री राम भगवान के हाथों रावण का वधहुआ। लंका में श्रीराम भगवान का विजय ध्वज लहराया। सर्वत्र जय जयकार हुई। बाद में सीताजी के साथ भगवान श्री राम तथा अन्य सेवक गण पुष्पक-विमान में अयोध्या पधारे। अयोध्या की प्रजा ने स्वागत किया। भगवान श्रीरामजी का राज्याभिषेक किया गया। माता कौसल्याजी के मन में एक विषय को लेकर निरंतर चिंता थी। मेरे पुत्र राम तथा लक्ष्ण तो बहुत छोटे है। शरीर भी सुकोमल है। जब की रावण तो बड़ा राक्षस था उसके साथ संग्राम में सुकुमारो ने किस प्रकार विजय प्राप्त किया। इस बात का माता के मनमें बार-बार विचार आता।

"हृदय विचार हि बारहि बारा,
कवन भांति लंकापति पारा,
अति सुकुमार जुगल मेरे बारे,
निशिचर सुभट महाबल पारे।"

एक दिन तो माताजीने इस विचार को श्रीराम प्रभु के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। माताने भगवान श्री राम को पूछा, 'आप छोटे, सुकुमार तथा कोमल देह धारी है तो रावण जैसे भयंकर राक्षस को कैसे मारा ?'' इस प्रकार का प्रश्न यदि कोई हमसे करे तो उसका प्रतिउत्तर किस प्रकार देना चाहिए वह हमें इस उत्तर से समझना चाहिए।

आप सोच भी नहीं सकते की भगवान श्री रामजीने माता को क्या जवाब दिया ? तमाम प्रजा के मुख पर प्रभु श्रीरामजी का जयजयकार है। प्रभु के विजय की गाथा और उत्सव देश भर में मनाया जाता है। प्रथम प्रस्न का प्रभु श्रीरामजीने उत्तर दिया।

प्रभु श्रीरामजीने कहा कि,

"गुरु वशिष्ट कुल पूज्य हमारे,
इनकी कृपा दनुज रन मारे।"

माताजी ! हमारे कुलगुरु श्री वशिष्टजी की कृपा से हम रावण जैसे राक्षस का संहार करने में समर्थ हुए। कितना विनयपूर्ण था ये। स्वयं किये हुए कार्य का यश अपने कुलगुरु वशिष्ट मुनि को प्रभु श्रीरामजीने दे दिया।

मित्रो ! श्री राम प्रभु के इस प्रतिउत्तर से हमें क्या शीखने को मिला ? हमें यह सिखने को मिला की यहि हमारे माता-पिता या श्रेष्ठ से इस प्रकार का प्रश्न किया जाय तो उसका उत्तर किस प्रकर देना चाहिए। भगवान श्रीरामचंद्रजी के उत्तर की तरह विनम्रता तथा विनय जेसे सद्‌गुण होंगे तो ही यह कार्य संभव है।

हमारे हाथों यदि थोड़ा भी शुभ कार्य हो तो उत्तर इसी प्रकार का होना चाहिए कि पूज्यपाद आचार्य महाराजश्री तथा संतो के आशीर्वाद से कार्य पूर्ण हुआ। ऐसी विनम्रता के साथ आशीर्वाद निरंतर प्राप्त हो तथा जीवनपर्यंत शुभकार्य होते रहे।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
"आषाढ शुक्ल एकादशी-नियम की एकादशी"
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर - कालुपुर मंदिर हवेली)

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

आषाढ शुक्ल एकादशी से पवित्र चातुर्मास का आरंभ होता है। इस महीने से भगवान शयन करते हैं। शंखासुर का वधकरने के बाद विष्णु भगवान क्षीरसागर में शेष नाग के ऊपर चार महीने के लिये सो जाते हैं। सोना, खाना यह सभी मनुष्य की क्रिया है। सत्यरुप में भगवान सो जांय तो सृष्टि का क्या होगा ? इसका मतलब भगवान ४ महीने के लिये योग निद्रा में होजाते हैं ? योगनिद्रा भगवान के जागते हुये सोने की रीति है। (प.पू. गादीवालाजी को किसी गाँव से कोई भोली भाली बहेनने फोन किया -

सभी लोग कहते हैं कि भगवान सो जाते हैं, तो मेरे पिताजी बीमार है, वे मरजायेंगे तो भगवान लेने आयेंगे ?

प.पू. गादीवालाजीने कहा कि ऐसा नहीं है, जिस तरह माता को बालक की चिन्ता रहती है, उसी तरह भगवान को भी हम सभी की चिन्ता रहती है। भगवान सोते ही नहीं है। जिस तरह पुत्र-पुत्री छोटे हों तब तक माता को गाढ निंद्रा कभी नहीं आती। बालक ज्यौं रोता है त्यौं माता जगजाती है। बालक के रोने की आवाज किसी को सुनाई दे या नदे लेकिन माता को अवश्य सुनाई देती है। इसी तरह भगवान भी योग निद्रा में होते हैं, जब भी हम पुकारें तब वे सुनलेते हैं। हाँ, पुकार सच्ची होनी चाहिये। भगवान जग जायेंगे, आप चिन्ता मत कीजिये।

चातुर्मास में विशेष भक्ति करने का अर्थ यह है कि - विद्यार्थी जब स्कूल में रहता है तब शिक्षक के सामने अच्छी तरह पढता है, जब शिक्षक कक्ष से बाहर चला जाता है तब सभी आपस में बात करने लगते हैं। जिस तरह कंपनी का मालिक नहो तो भी काम करने वाले अच्छी तरह काम करते हैं, इससे मालिक खूब प्रसन्न हो जाता है। इसी तरह चार महीने भगवान जब निद्राधीन रहते हों तब हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि हम भी खूब भक्ति करके भगवान को प्रसन्न कर लें। जब भगवान जागें तब उन्हीं के चरणों में की गयी भक्ति का समर्पण कर देना चाहिये। इससे अपनी शरीर का भी अच्छा होता है जिस तरह मानव सृष्टि है, उसी तरह देव सृष्टि भी है। अग्नि देव, वरुण देव, वायुदेव, ये देव सृष्टि में आते हैं। ये देव सृष्टि इस संसार सागरमें रहने की जगह खोज रहे थे, उन्हें कही रहनेकी जगह मिली, लेकिन उन्हें अच्छा नहीं लगा। तब भगवानने मनुष्य की शरीर बताया तो उन्हें मनुष्य शरीर अच्छा लगा। देवतालोग प्रसन्न होगये। सभी देवता मनुष्य शरीर में अपने-अपने स्थान खोज लिये। देवताओं की शक्ति अपनी ऊर्जा है। वाणी के देवता अग्निदेव हैं। त्वक (चमड़ी) के देवता वायु हैं। रसना (जीभ) के देवता वरुण हैं। मन के देवता चन्द्रमां है। इस तरह दश इन्द्रियों के तथा चार अन्तःकरण कुल १४ तत्वों के अलग-अलग देवता हैं। मानव शरीर के शक्ति की तुलना देवताओं के साथ की गयी है। जिस तरह देव सृष्टि हमारे भीतर है, उसी तरह परमात्मा भी अपने भीतर है। इस लिये अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिये चातुर्मास में व्रत करने का विधान है। उपवास करने का विधान है, व्रत उपवास यह जीव विज्ञान है। सम्पूर्ण शरीर शास्त्र है। इस समय शरीर बिमार रहती है। खाया पचता नहीं है। भगवान कितनी दवा किये हैं। अपनी

शरीर अच्छी रहे इसके लिये सारे नियम बताये हैं। उसका मात्र हमें पालन करना है। आपको विचार करना है कि २४ घन्टे में २६४०० सेकेन्ड होते हैं। हम इसमें से कितना सेकेन्ड भगवान के धन्यवाद में निकालते हैं। किसी की निंदा करने में कितने सेकेन्ड बिगाड देते हैं।

व्यर्थ का समय न चला जाय इसका सदा ध्यान रखना चाहिये। गरीब की मदद करनी चाहिए। एक धनवान मनुष्य गाडी में जा रहा था। सड़क पर एक गरीब लड़की भीख मांग रही थी. उसे देखकर उसे बहुत दुःख हुआ, घर जाकर जब भोजन कर रहा था तब भोजन उसे अच्छा नहीं लगा। वह सो गया। सोते समय उसे स्वप्न आया कि कैसी विषमता है ? मेरे भोजन में नाना व्यञ्जन है, उस लड़की के पास रोटी का टुकडा भी नहीं है। तो ऐसे लोगों के लिये क्या ? भगवान ने स्वप्न में कहा कि ऐसे लोगों के लिये तुम्हारे जैसे लोगों को मैने बनाया है। यह सब विचार कर हमें कुदरत के संकेत को समझना चाहिये कि जब हम धरती पर आये तो कुछ भी लेकर नहीं आये थे। यह सब भगवान का दिया हुआ है। जो भगवान से मिलता है वह प्रसादी का होता है। प्रसाद को अकेले नहीं खाना चाहिए, बांटकर खाना चाहिए।

सभी लोगों को चाहिए कि चातुर्मास में एक नियम अवश्य लें, अधिक न हो सके तो परिवार के सभी सदस्य एक स्थान पर बैठकर शास्त्र का वांचन करें। इस तरह सभी को एक साथ बैठने का अवसर मिलेगा। उसमें भी भगवान का नाम लिया जायेगा तो और अच्छा होगा। साथ में भजन करने की महिमा भी बहुत है। एकता भी आयेगी। एक साथ भगवान की बात भी होगी। इससे घर के वातावरण में परिवर्तन होगा।

●

नम्रता

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

नम्रता अपने जीवन का अलंकार है। नम्रता का मतलब अहंभाव का नाश। अपने अहंकार के कारण अपने भीतर की भूल दिखाई नहीं देती। नम्रता रुपी सद्‌गुण अपने भूल का दर्शन कराता है। पाषाण हृदय को पिघला देने की शक्ति नम्रता में होती है। महापुरुष नम्रता के कारण ही महान पद को प्राप्त किये हैं। जो नम जाता है वह सभी को गमजाता है। मनुष्य को सुधरने की शक्ति नम्रता में से मिलती है नम्रता प्रगति का मार्ग है। नम्रता एक सद्‌गुण है। अहं की अपेक्षा नम्रता महान है। दानी, ज्ञानी, त्यागी, वैरागी इन महापुरुषो की महानता के पीछे नम्रता छिपी हुई है। नम्रता पत्थर जैसे हृदय को भी मोम जैसी नम्र बना देती है।

मुक्तानंद स्वामी की नम्रता के कारण ही जोबन पगी भक्त बना था। बुद्ध की नम्रता के कारण अंगुली मालडांकू बौद्ध भिक्षुक हो गया। अपने धर्मग्रन्थो का एक मूलमंत्र है। जो नम्र होकर झुकता है वही उन्नति कर सकता है। नम्रता व्यक्ति के व्यक्तित्व का आभूषण है। इसी के माध्यम से अपना व्यक्तित्व सुन्दर बनता है। नम्रता के कारण ही सफलता तथा सन्मान मिलता है। नम्रता के कारण हम एक दूसरे के संबन्धको जोड सकते हैं। भारतीय संस्कृति में नम्रता को व्यक्त करने के लिये प्रणाम या अभिवादन करने की परंपरा है। अपने जीवन में नम्रता बनी रहे इसलिये प्रार्थना या स्तुति की जाती है। इससे अपने भीतर का अहंकार खत्म होता है।

मन स्वच्छ हो जाता है। मन की कोमलता तथा व्यवहार में नम्रता यह दोनो महान शक्ति है। इससे कोमलता सदाजीवित रहती है। नम्रता के रहने पर कठोरता का जल्दी नाश हो जाता है। तलवार कठोर से कठोर पदार्थ को काट डालती है। परंतु कितने कठोर पदार्थ को काटने में समर्थ नहीं है।

एकवार बाबा फरीद को मिलने के लिये एक राजा आया। वह बहुत अहंकारी था। वह बाबा को भेंट में देने के लिये तलवार लाया था। वह बाबा से कहा यह भेंट आपके लिये हैं। वह भेंट देखकर बाबाने कहा, राजन्! मैं आपका आभारी हूँ कि आप हमारे लिये कीमती तलवार भेंट में लाये हैं। लेकिन यह हमारे लिये किसी काम की नहीं है। यही आपको भेंट देना ही है तो सूई के साथ विनम्रता की भेटं दे दो। ये दोनो तलवार से भी अधिक हमारे लिये कीमती हैं।

राजाको फरीद बाबा से ऐसी उम्मीद नहीं थी । राजा बाबा की वात सुनकर अवाक् रह गया । बाद में बोला, छोटी सूई तथा नम्रता तलवार का सामना कैसे कर सकती है । बाबा ने कहा एक महंगी तरवार मात्र लोगो के काटने का काम कती है, जब कि छोटी सूई वस्तु को जोडने का काम करती है । तोडना सहज है लेकिन जोडना बड़ा ही कठिन है । यह नम्रता की महिमा है ।

महाभारत के युद्ध विराम के बाद धर्मराज युधिष्ठिर भीष्म पितामह के पास गये । उस समय वे शर शैय्या पर सो रहे थे । युधिष्ठिर ने धर्मोपदेश देने की वात कही । भीष्म पितामहने कहा कि नदी समुद्र तक पहुंचती है । जब वह चलती है तब पानी के साथ बडे-बडे वृक्ष को भी बहा ले जाती है । एक दिन समुद्र नदी से पूछा कि तुम पानी के साथ वृक्ष क्यों लेकर आती हो । साथ में लता, छोटे वृक्ष क्यों नही लाती । तब नदीने कहा कि जब प्रवाह मेरा तेज होता है तो लतायें झुंक जाती है और पानी को आगेजाने देती है, जब कि वृक्ष छाती तानकर खडे ही रहते हैं, इस लिये वे अपने अस्तित्व को डुबा देते हैं । भीष्म ने कहा कि युधिष्ठिर ! इसी तरह जो मनुष्य जीव में विनम्र रहता है उसके अस्तित्व का नाश कभी नहीं होता । विनम्रता के अभाव में घर में या आफिस में सदा परेशानियों को सहता रहता है । नम्रता से व्यक्ति को शांति, सहनशीलता, शक्ति, ऊर्जा मिलती है । नम्रता पत्थर जैसे मनुष्य को मक्खन जैसे मुलायम बना देती है । विनम्र व्यक्ति के सामने कठोर हृदयवाला व्यक्ति झुक जाता है । जो विनम्र होता है उसे हर स्थान पर सनमान मिलता है ।

सभी अंगुलियां समान नहीं है । लेकिन जब हथेली में मुडती है तब समान तथा सुंदर लगती हैं । इसी तरह जीवन के प्रत्येक परिस्थिति में नम्र बने रहेंगे तो निश्चित ही अच्छी तरह जी सकेंगे । बत्तीस दांत के बीच में जीभ विनम्र होकर रहती है, इसी लिये वह दांतो के झपट में नहीं आती । दांत पहले आते हैं और पहले चले भी जाते हैं । जब कि जीभ शरीर के साथ आती है और अंत तक रहती है ।

वसंतऋतु में आम के वृक्ष पर आम्र फल लगने से वृक्ष नम्र हो जाते हैं । बादल में जब पानी भराता है तब वे नम्र हो जाते हैं । बिजली जब चमकती है तब वह पृथिवी की तरफ आती हैं । संपत्ति मिलते ही व्यक्ति नम्र बन जाता है । नम्रता के सामने कोई संपत्ति टिक नहीं सकती । अहं की अपेक्षा नम्रता महान है ।

श्रीजी महाराज एकबार जालियां गाँव के शेठ हीराभाई के यहाँ गये । श्रीजी महाराज के साथ संत-हरिभक्त भी थे । वहीं पर सभी लोग ठाकुरजी का भोग लगाये और प्रसाद ग्रहण किये । बाद में रात्रि के समय सभा की तैयारी होने लगी । उसी समय गाँव का नापित (नाऊ) आया और हीराशेठ से कहने लगा । मैं आपके स्वामिनारायण के सामने मशाल लेकर नहीं खडा रहूँगा । इसका कारण यह है कि हमारी जाति के लोगों ने प्रतिबन्धरख दिया है । यह वात जब हो रही थी उस समय झीणाभाई वहाँ खडे थे । उन्होंने हीराशेठ से कहा कि ''मशाल लेकर मैं खडा रहूँगा । चिन्तामत कीजिये । हीराशेठने कहा कि ''ऐसा नहीं, आप तो पंचाला के दरबार है आप कैसे मशाल ले सकते हैं । मैं स्वयं लेकर खड़ा रहूँगा । तब झीणाभाईने कहा ''दरबार तो मैं मात्र पंचाला का हूँ, मुझे जिनकी मिशाल उठानी है वे श्रीजी महाराज कैसे हैं ,आपको खयाल है ? अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति हैं । ब्रह्मासे अक्षर प्रर्यन्त जिनके चरण की रज माथे पर चढाते हैं ऐसे स्वामी की मशाल उठाने को हमें मिल रहा है यह भाग्य अन्यत्र कहाँ है ?

छोटी सेवा बड़े भाग्यशालियों को मिलती है । भव-ब्रह्मा जैसे को नहीं मिलती । इसलिये सत्ता नम्रता से सुशोभित होती है । महानता विवेक से शोभती है । नम्रता महापुरुष बनने की प्रथम निशानी है । दूसरों को बड़ा तथा प्रथम कक्षा का समझना नम्रता का प्रथम सोपान है ।

●

आपके मुख की सुन्दरता मीठी रे

- वीणाबहन नरेन्द्रभाई ठक्कर (बोपल)

श्रवणं मंगलं यस्य कीर्तनं यस्य मंगलम् ।
स्मरण मंगलं यस्य सहारि मंगलं क्रियात् ॥

अपने उद्धव संप्रदाय में सर्व प्रथम श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा संवत १९४२ में अमदावाद में

भगवान श्री स्वामिनारायण के निवास स्थान रंगमहल में वडनगर के प्रसिद्ध शिल्पकार श्री लल्लुभाई मिस्त्री प.पू.ध.धु. आचार्य केशवप्रसादजी महाराज की उपस्थिति में काष्ठ की वैसी ही प्रतिकृति तैयार की जैसी छबि भगवान स्वामिनारायण की थी, इसके बाद अन्यत्र ऐसी मूर्तियां प्रतिष्ठित हुई अक्षरधाम में विराजमान श्रीजी महाराज के स्वरुप का दर्शन रंगमहल में बिराजमान घनश्याम महाराज मे लेशमात्र भी अंतर नहीं है । मंद मुस्कान, हाथ में अंकुश मुद्रा धारण किये हुये हैं। अंकुश मुद्रा से यह साबित होता है कि मैं ही सभी का नियामक हूँ । मुझसे कोई ऊपर नहीं है । महाराज के बायें हाथ से अभयदान की मुद्रा का दर्शन होता है । यह वरदान से अपने आश्रितों को निर्भयता का वचन देते हैं।

ऐसी घनश्याम महाराज की मूर्ति चिंतामणी के तुल्य है । जो आश्रित धर्म-भक्ति, ज्ञान-वैराग्य के मार्ग पर चलते हैं उनके ऊपर महाराज खूब प्रसन्न होते हैं । दुष्ट-असुरों से हम सभी की रक्षा करते हैं । स्वयं लंबे समय तक तप करके तीर्थाटन करके भक्तों के लिये गर्मी-ठन्ढी-बरसात का सहन किये हैं । यह किसी को भूलना नहीं चाहिये ।

इसके लिये मन-वचन तथा कर्म से महाराज की शरणागति स्वीकार करनी चाहिये । भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि हे महाराज ! हमें मुक्तानंद स्वामी तथा ब्रह्मानंद स्वामी की तरह सत्संग की समझप्रदान कीजिये । आपकी मूर्ति में अखंड दर्शन का भाव बना रहे ऐसी विचार शरणी दीजिये । आप इस संसार सागर से पार कीजिये । आप मेरी विन्ती सुनकर अवश्य दर्शन दीजिएगा । आप अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति हैं । अक्षर ब्रह्म की आत्मा हैं । सर्व कारण के कारण हैं । ईश्वर के भी ईश्वर हैं । सूर्य-चन्द्र-नक्षत्र सभी आपकी आज्ञा से आकाश में रहते हैं । शेष-शारदा आपके गुणानुवाद करते रहते हैं । अक्षरधाम में दिव्य सिंहासन पर बैठकर अनंत कोटि मंडली की सभा में सभी को दिव्य दर्शन देते रहते हैं । सभी जीवों को अन्तकाल में लेने स्वयं आते हैं। इसीलिये प्रेमानंद स्वामी ने लिखा है कि -

"अति दयालु रे स्वभाव छे स्वामीनो,
पर दुःख हारी रे वारी बहु नामी नो ।
कोईने दुःखिया रे देखवी न खमाय,
दया आणी रे अति आकडा थाय ।
अन्न-धन-वस्त्र रे आपी ने दुःख टाले,
करुणा दृष्टि रे देखवी वानज वाले ।"

सभी के मनोरथ को पूरा करते है, बहुत सारे प्रत्यक्ष अनुभूत प्रमाण हैं । श्रीहरि लाडुदान के जीवन में एक अद्‌भुत अनुभूति कराये -

"चार मिले चौसठ खिले, वीस रहे कर जोर ।
जे ही मिलत छाती ठरे, हरखे सघ कठोर ॥"

प्रथम मिलन में ही अत्यानंद की ऊर्मी समा नही पायी और काव्य के रुप में महाराज के लिये गाये -

"तारा मुख की लावण्यता मीठी रे, मोहन वनमाली,
एवी त्रिभुवन मां नव दीठी रे, मूर्ति वनमाली ।"

भगवान की ऐसी लुभावनी मूर्ति देखकर सुन्दर कीर्तन स्वयं प्रगट हो गया । राग गरबी में तीन पदो वाली यह रचना शब्दरुप में परिणत हुई और उस मूर्ति में मस्त हो गये । तीनो लोक में ऐसी दिव्य मूर्ति का दर्शन मिलना संभव नहीं है, यह भाव इस पद से भासित होता है । ऐसा लगता है कि कविने महाराज मय होकर कविता की रचना की है।''धन्य हैं वे रंग दासजी ।

नीचे के श्री स्वामिनारायण मंदिर में नये महंत स्वामी की नियुक्ति की गयी है

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (नया तथा पुराना) स.गु. शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. भक्तिहरिदासजी तथा सगु. शास्त्री स्वामी विश्वविहारीदासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. भक्तिहरिदासजी (मूली - वर्तमान में रणजीतगढ)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला - स.गु. महंत स्वामी धर्मसुतप्रियदासजी गुरु स.गु. ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा - स.गु. शा.स्वा. नंदकिशोरदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार - स.गु.स्वा. मुकुन्दप्रसाददसाजी गुरु स.गु. स्वा. राधाकृष्णदासजी (मूलीवाला)

सत्संग समाचार

श्री नरनारायणदेव पीठ के भावी आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १९ वाँ प्रागट्योत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री का १९ वाँ प्रागट्योत्सव द्वितीय अषाढ कृष्ण-१० ता. ९-८-१५ रविवार को धूमधाम से मनाया गया था।

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप द्वारा सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती की गयी, उसके बाद प्रभु का दर्शन करके सभा में विराजमान हुये । विद्वान विप्रो द्वारा स्वस्तिवाचन किया गया। इके बाद संत-हरिभक्तों द्वारा समूह आरती की गयी।

आज के शुभ अवसर पर छोटे-छोटे संतो द्वारा धर्मकुल के प्रति निष्ठाका भाव व्यक्त किया गया । पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी इत्यादि संतोने अपनी अन्तर कीभावना व्यक्त की।

आज के प्रसंग के यमजान प.भ. नवीनभाई मांडलिया (मोरबी) परिवारने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था।

बाद में प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते हुए संत-हरिभक्तों के निष्ठा की प्रसंशा किये थे। आज के शुभ अवसर पर सभा संचालन का कार्य स्वा. नारायण मुनिदासजीने किया था । (योगी स्वामी)

श्रीनरनारायणदेव के सानिध्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण

श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा श्री नरनारायदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कालुपुर मंदिर के पूज्य महंत शास्त्री स्वा. हरिकृष्णदासजी की शुभ प्रेरणा से कांकरिया प्रान्त के मेडा निवासी (वर्तमान में अमदावाद) प.भ. खीमजीभाई भगवानभाई पटेल के संकल्प से उन्हीं के पुत्र प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल तथा .भ. गोविंदभाई खीमजीभाई पटेल आदि परिवार की तरफ से श्रीहरि की प्रसन्नता के लिये श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में १६-८-१५ से ता. २२-८-१५ तक प्रातः ६-०० से ८-०० बजे तक प्रसादी के दिव्य सभा मंडप में संप्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी के सुमधुर कंठ से सत्संगिजीवन की कथा का सप्ताह पारायण संपन्न किया गया था। प्रातः काल में कथा का श्रवण करके भक्तजन आनन्दित हो रहे थे।

ता. २२-८-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति हुई थी। प्रातः ९-०० से १०-३० तक महामंत्र धून तथा ठाकुरजी की रसोई एवं धर्मकुल-संत सभी के रसोई की व्यवस्था यजमान परिवार की तरफ से हुई थी। यजमान परिवार के प.भ. भीमजीबापा तथा उनके पुत्र प.भ. रतीभाई (ट्रस्टीश्री) चि. केतनभाई, प.भ. गोविंदभाई, चि. शरदभाई आदि परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। समग्र आयोजन ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, को. जे.के. स्वामी इत्यादि संत मंडलने सुंदर व्यवस्था की थी ।(को.शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में झूलोत्सव दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में झूलोत्सव का धूमधाम के साथ दर्शन करवाया गया था। जिस में पंचमेवा, चोकलेट, फूल-फल इत्यादि से सुन्दर झूले को सजाकर श्रीहरि को झुलाया गया था। पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी कोठारी जे.के. स्वामी, शा. मुनि स्वामीने इस प्रसंग का सुंदर आयोजन किया था ।(को. मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में पवित्र अधिक मास में उत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में पवित्र अधिक मास में सभी उत्सव धूमधाम से मनाये गये थे।

मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज इत्यादि देवों का षोडशोपचार पूजन किया गया था। प्रभु को फूलों से अलंकृत किया गया था, कुंजगली, अन्नकूट, श्रीमद् सत्संगि भूषण की कथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदाजी के सुमधुर कण्ठ से की गयी थी।

कथा के अन्तर्गत श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा विधिकी झांकी का दर्शन करवाया गया था। श्रीहरिकृष्ण महाराज के समूह अभिषेक का लाभ सभी भक्तों ने लिया था। पंचाला के रास का तादृश झांकी का दर्शन कराया गया था। समूह महापूजा में ३०० जितने सपत्नीक यजमान बैठे थे। महापूजा की पूर्णाहुति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से की गई थी। मुख्य यजमान प.भ. घनश्यामभाई पटेल (विहारवाला) तथा प.भ. विपुलभाई पाणीया (शिलालेखवाला) ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन-आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

समग्र आयोजन मंदिर के महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी के तथा महंत स्वा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में संपन्न किया

गया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी ।

नारायणघाट मंदिर में झूला दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में पवित्र श्रावण मास में ठाकुरजी के समक्ष विविधप्रकार से झूले को सजाकर उस पर ठाकुरजी को झुलाया गया था ।

झूले को सजाने की सेवा संत मंडल तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने की थी । प.पू. बड़े महाराजश्री इस अवसर पर दर्शनार्थ पधारे थे । दर्शन करके प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे । (साधु दिव्यप्रकाशदास - नारायणघाट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा अधिक मास में पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पवित्र अधिक मास में पाटोत्सव को अच्छी तरह मनाया गया था । इस उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन प्रथम प्रकण की कथा रात्रि में तीन दिनतक की गयी थी ।

यजमान प.भ. रवजीभाई पटेल के घर से ता. २३-६-१५ को गाजे बाजे के साथ पोथीयात्रा निकाली गयी थी । ता. २४ से २६ जून तक नारणपुरा मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर कथा का आयोजन किया गया था । श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार से अभिषेक-पूजन किया गया था । प्रात: १०-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

यजमान परिवार के बहनो को आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । सभी बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अन्नकूट आरती उतारकर आशीर्वाद दिये थे ।

समग्र व्यवस्था शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी के मार्गदर्शन में हुई थी । भूदेव, पार्षद, युवक मंडल तथा महिला मंडलने प्रेरणात्मक सेवा की थी । (को. मयुर भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा पू. बड़ी बहनजी के पुण्य स्मृति में १२ घन्टे तक अखंड धुन

प.पू. बड़े महाराजश्री की बहन तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की बूआ जी बड़ी बहन अक्षरनिवासीनी हुई, उन्हीं के पुण्य स्मृति में नारणपुरा श्री स्वामिनारायणमंदिर में पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से प्रात: ७-३० से सायंकाल ७-३० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून सभी हरिभक्त मिलकर किये थे । (मयुर भगत)

नारणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा ऋषिकेश में श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से ऋषिकेश में श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा का आयोजन ता. ८-७-१५ को किया गया था । वहाँ से करीब ६०० जितने हरिभक्त रेलवे द्वारा हरिद्वार पहुंचकर दोपहर में ऋषिकेश में बाबा काबलीवाला के रमणीय वानप्रस्थ आश्रम में सायंकाल ६-०० बजे पोथीयात्रा के साथ प्रथम सत्र का आरंभ हुआ था । इस यात्रा में करीब ४० जितने हरिभक्त जिसमें प.भ. दशरथभाई पटेल (सदस्य) प.भ. रतीभाई पटेल (सदस्य) तथा घनश्यामभाई (फुवा) श्री नटुभाई, श्री रसिकभाई सोनी इत्यादि हरिभक्त प्लेन से पधारे थे । बेंगकोक से प.भ. प्रागजीभाई कडीया भी इस प्रसंग पर अपनी माता-पिता के सात पधारे थे । कथा के यजमान प.भ. इन्द्रवदनभाई रावजीभाई पटेल (हीरापुरवाला) परिवार ने अपने जीवन का अनमोल लाभ लिया था । सातों दिन प्रात: काल ७-०० से ८-०० बजे तक गंगाघाट पर श्रीहरि की षोडशोपचार पूजा की गयी थी ।

प्रात: अल्पाहार के बाद ९-०० बजे कथा प्रारंभ हुई थी । १०-३० बजे हरिभक्त महाप्रसाद लेकर दर्शनीय स्थलों का दर्शन किये थे । रात्रि में ८-३० से १०-०० बजे तक कथा चली थी जिसमें घनश्याम महाराज का प्रागट्योत्सव दिव्य ढंग से मनाया गया था ।

ता. १२-७-१५ को भूज से पधारे हुए स.गु. शा. स्वामी उत्तमचरणदासजीने सभाजन को खूब आनंदित किया था। ता. १४-७-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा जेतलपुरधाम से पधारे हुये पी.पी. स्वामीने गंगाका माहात्म्य बताया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री रात्रि सभा में पधारकर अलौकिक सुख प्रदान किया था । ता. १५-७-१५ को ११ बजे कथा विराम के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हरिभक्तों को संमानित किया गया था । बाद में प.पू. महाराजश्रीने सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । आज सभी संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजने गंगाजी का पूजन करके श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार से विधिवत केशरमिश्रित गंगाजल से अभिषेक किया था ।

ठाकुरजी का भव्य अन्नकूटोत्सव मनाया गया था । ता. १५-७-१५ अभिषेकोत्सव किया गया । ता. १६-७-१५ को पूर्णाहुति के दिन प्रात: ८-०० बजे कथा प्रारंभ के बाद १२-०० बजे पूर्ण हुई उसके बाद सभी महाप्रसाद ग्रहण किये थे ।

प्रसंग की पूर्व तैयारी के लिये युवक मंडल द्वारा पूर्व तैयारी की गयी थी । हरिद्वार मंदिर के महंत स्वामी मुकुन्दप्रसाददासजीने रसोई की सम्पूर्ण व्यवस्था सम्भाली थी । प.भ. जेरामभाई कानाणी की सेवा सराहनीय थी ।

जलगाँव वाले पी.पी. स्वामी जैसे ४५ संतो के आगमन से प्रसंग की शोभा बढ गयी थी । नवधाम से आये संतो से यहाँ की शोभा में अभिवृद्धि हो गयी थी । नारणपुरा मंदिर के भूदेव मंडल के मयूर भगत, विशाल भगत, सचिन भगत, इत्यादि संत मंडलने उत्तम सेवा की थी ।

नारणपुरा तथा यहाँ की महिला मंडल सातो दिन तक छोटी से छोटी सेवा करके उदाहरण का रुप बनी थी । अहमदाबाद के अलग-बगल के हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी । हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा किये थे । (पुजारी स्वा. श्रीजीचरणदासजी - नाराणपुरा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल में बहनो की शिबिर

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से तथा सां.यो. सुरजबा, जवेरबा की प्रेरणा से ता. ६-८-१५ को प्रातः ८-०० बजे से ११-०० बजे तक सुंदर शिबिर का आयोजन किया गया था। जिस में - धमासणा, सोजा, कलोल, झुंडाल तथा अमदावाद की सांख्ययोगी बहने भगवान श्री स्वामिनारायण के लीलाचरित्रों का वर्णन की थी । अन्त में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर सभी बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। (सां. दर्शनाबहन)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर मे द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी तथा को. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी की प्रेरणा से कालीयाणा सत्संग मंडल द्वारा ता. १६-७-१५ को यहाँ के मंदिर में १२ घन्टे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गई थी । इस प्रसंग पर सभी हरिभक्तों ने मंत्र लेखन का संकल्प लिया।

(अरजणभाई गो. मोरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघाणीनगर (अमदाबाद) ज्ञानयज्ञ का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मेघाणीनगर मंदिर में पवित्र श्रावण मास में ता. १५-८-१५ से ता. २२-८-१५ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण रात्रि सप्ताह पारायण का आयोजन किया गआ था । जिस के वक्ता शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा) ने कथा का रसपान कराया था। जिस में श्रोताजन मंत्र मुग्धहोकर रसपान किये थे। (बलदेवभाई जे. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर (राज.) शताब्दी महोत्सव

राजस्थान की राजधानी जयपुर के चांदपोल बाजार में श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर में भगवान श्रीहरि की प्राणप्रतिष्ठा इ.स. १९१५ में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री वासुदेवप्रसाददासजी महाराजश्री के वरद् हाथों हुई थी। जिस मंदिर के प्रतिष्ठित हुये १०० वर्ष हुये इसलिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर धाम के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. पू.पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से उन्हीं के शिष्य महंत शा.स्वा. देवस्वरुपदासजी के सुंदर प्रयास से १५ से १८ अगस्त तक शताब्दी महोत्सव मनाया गया था। इस प्रसंग पर तीन दिन तक ज्ञानयज्ञ में भागवत का स्वामिनारायण संप्रदाय में गोविंद शब्द को आधार बनाकर पू.पी.पी. स्वामी ने हिन्दी में जयपुर के आराध्यदेव गोविंदजी के मंदिर की विशाल सभा में श्रोताओं को कथा का रसपान कराया था। त्रिदिनात्मक विष्णुयाग तथा मंदिर में बिराजमान देवों को षोडशोपचार पूजन-अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ था। इस प्रसंग में अमदावाद, वडताल, मूली, भुज, गढडा, जेतलपुर, जूनागढ इत्यादि धामों से १०० जितने संत पधारे हुये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से महाराज द्वारा शिक्षापत्री में जिन आठ शास्त्रों का वर्णन किया है उसका सेट यजमानों को दिया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का तथा धामों से पधारे हुये संतो का यजमानों द्वारा संमान किया गया था। अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने प्रसन्न होकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। समग्र महोत्सव में महंत श्री के.पी. स्वामी - जेतलपुरधाम, विश्वप्रकास स्वामी - अंजली, हरिओं स्वामी - नारणपुरा, नारण स्वामी - महेसाणा, विजय स्वामी - वाली इत्यादि संत खडे पैर सेवा किये थे।

(महंत साधु देवस्वरुपदासजी - जयपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु दिल्ही में पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा साधु अनिरुद्धदासजी तथा पुजारी स्वा. धर्मप्रियदासजी की प्रेरणा से प.भ. अरविंदभाई संध्यालाल पटेल, किरीटभाई मणीलाल पटेल, इत्यादि परिवार की तरफ से न्यु दिल्ही मंदिर में विराजमान बालस्वरुप घनश्याम महाराज का २२ वाँ पाटोत्सव मनाया गया था।

श्रावण शुक्ल-६ को श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार अभिषेक, श्रृंगार आरती, अन्नकूट, महापूजा इत्यादि किये गये थे। समग्र प्रसंग में अयोध्या के महंत स्वामी देव स्वामी, शा. विश्वस्वरुपदसाजी, शा. छपैया स्वामी, इत्यादि नंद संतने भगवान का तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाकर यजमानों की सेवा की प्रसंशा की थी। दिल्ही के हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये थे।

(शा.छपैयाप्रसाददासजी - मूली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार (कनखल) श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण (ता. १७-८-१५ से ता. २३-८-१५ तक)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से हरिद्वार के महंत स्वामी तथा अचल भगत के मार्गदर्शन में सीसल्स के प.भ. प्रवीणभाई वालजीभाई दाराड, जगदीशभाई वालजीभाई दाराड तथा किशोरभाई वालजीभाई दाराड परिवारने अपने माता-पिता की पुण्य स्मृति में भागवत सप्ताह का आयोजन किया था।

श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा का रसपान स्वा. विश्वविहारीदासजीकी वक्तापद पर सभी भक्तजन किये थे। भुज मंदिर के दाराड परिवार के गुरु स्वामी जगतपावनदासजी स्वामी कृष्णप्रसाददासजी स्वा. सौनकमुनिदासजी, स्वा. भक्तिजीवनदासजी, स्वा. सत्यजीवन तथा स्वा. उत्तमचरणदासजीने सभा संचालन करके हास्य विनोद के साथ सत्संग की महिमा समझायी थी।

सम्पूर्ण कथा के समय स्वामी धर्मकिशोरदासजी ठाकुरजी को नाना विधअलंकृत करके मूर्ति के दर्शनका लाभ भक्तों को दिये। (पार्षद जीतु भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी में अधिकमास को भव्य मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी भक्तिहरिदासजी के मार्गदर्शन से एवं मोरबी मंदिर के महंत स्वामी भक्तिनंदनदासजी तथा स्वा. विश्वविहारीदासजी की प्ररणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक मास में वर्ष के भीतर आने वाले सभी उत्सव सोल्लास मनाये गये थे । संतो द्वारा श्रीहरि के समक्ष धुन-कीर्तन किया गया था । हरिभक्त मास पर्यन्त अलग-अलग उत्सव के यजमान बनकर सेवा किये थे । झूले पर श्रीहरि को नानाविधअलंकारो से अलंकृत करके सभी ने झुलाया था ।

(महंत स्वा. भक्तिनंदनदासजी - मोरबी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में गुरु पूर्णिमा महोत्सव

झालावाड - हालार - भाल का मोक्षद्वार ऐसा स.गु. स्वा. ब्रह्मानंद स्वामी तथा स.गु. देवानंद स्वामी द्वारा निर्मित श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का मूली धाम, जिस में आषाढ शुक्ल-१५ गुरु पूर्णिमा का उत्सव परंपरानुसार मनाया गया था । प.पू. बडे महाराजश्री संत-पार्षद मंडल के साथ पधारे थे । सर्व प्रथम श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की आरती करके दर्शन करके सभा में विराजमान हुये थे । ब्राह्मणों द्वारा महाराजश्री का स्वस्ति वाचन के साथ पूजन अर्चन किया गया । बाद में मंदिर के महंत स्वामी श्यामचरणदासजी तथा मूली के संतो ने पूजन आरती की थी । मंदिर के ट्रस्टी मंडल तथा यजमान श्रीजी विकटरी टाईल्स प्रा.लि. के प.भ. हरिभाई, तुलसीभाई, हीराभाई, देवजीभाई, जीवराजभाई, गोकुकलभाई, चमनभाई, विजयभाई, सुरेन्द्रनगर के हरिभक्त प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । प्रासंगिक सभा में संतोने गुरुकी महिमा का गुणगान किया था । हजारों भक्तों को प.पू. बड़े महाराजश्रीने प्रसन्नता का आशीर्वाद दिया था । पू. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी के मार्गदर्शन में को. ब्रह्म स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, भरत भगत ने सुन्दर सेवा की थी । हरिभक्त भी खडे पैर सेवा किये थे । इस अवसर पर मूली महिमा से युक्त सीडी तथा धर्मकुल की महिमा से युक्त सीडी का प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों विमोचन किया गया था । (पा. भरत भगत - मूली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में हुये कार्यक्रम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स.गु. स्वा. प्रेमजीवनदासजी के शुभ संकल्प से सुरेन्द्रनगर मंदिर के आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में मूली देश के गाँव में सत्संग प्रचार का कार्यक्रम किया गया था ।

हालार प्रान्त के जीरागढ, धूलकोट, बोडका, जामसर, लाखाणी, जोडीया, हडमीतया, लूंटावदर, रंगपर इत्यादि गाँवो में सत्संग सभा तथा धर्मकुल की महिमा तथा दशाब्दी महोत्सव की महिमा शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच) एवं रवि भगतने प्रवचन द्वारा समझाई थी । बड़ी संख्या में हरिभक्त स्तसंगा का लाभ लिये ते । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

सुरेन्द्रनगर मंदिर दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में नवधामों के साथ वडताल मंदिर में धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में विविधकार्यक्रम करीब १२५ गाँव में तथा नव महामंदिरो में १२ घंटे तक महामंत्र की अखंड धुन की गई थी । इस कार्यक्रम में यहाँ के संत भी साथ में जुड़े थे । मूली देश के अगल-बगल गाँवो के अनेक भक्त धुन का लाभ लिये थे । समग्र आयोजन को. स्वा. कृष्णवल्लभदासजीने किया था ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४३ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में चराडवा मंदिर के संतो द्वारा गाँवो में सत्संग प्रवृत्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आगामी ४३ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में चराडवा मंदिर के महंत स्वामी तथा संत मंडल ने मूली देश के गाँवो में भजन भक्ति के साथ मंत्रलेखन बुक, पेन तथा प्रागट्योत्सव की रुपरेखा भक्तों को दी थी । जिस में मूली, जसापर, लीमडी, खेराणी, खारवा, बदलदाणा, रतन पर, जोरावनगर, टींबा, लखतर, लीलापुर, मेमका, तरवी, शियाणी, वरसाणी, नटवरगढ, बलोल, पाणशीला, चूडा छत्रीयाणा, जोबाला, मोखाड, वस्तडी, खोलडीयाद, गुंदीयाला, टुवा, अचारडा, बोरणा, रामपरा, डोलिया, आया, सायला मोरबी, मोडपर, चांचावदरडा, डोलिया, आया, सायला, मोरबी, मोडपर, चांचावदरडा, पोपडीया, कांतिपर, जेतपर, खाखरेची, जूना, नवा धाटीलाय, टीकर, रमणलपुर, नसतपर, लूंटावदर, ईश्वरनगर, सुसवाव, भक्तिनगर, घनश्यामनगर, नरनारायणनगर, श्रीजीनगर, स्वामिनारायणनगर, हलवद इत्यादि गाँवो में लाभ दिया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४३ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में हलवद के १७५ भाई-बहनों ने हलवद से चराडवा मंदिर तक संतो के साथ पदयात्रा निकाली थी । चराडवा मंदिर में दर्शन करके सभा की गयी थी । अन्त में सभी प्रसाद लेकर स्वस्थान के लिये निकल गये थे ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - हलवद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी में बाल स्वस्वरुप श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में पवित्र अधिक मास में ता. २८-६-१५ से ८-७-१५ तक शा. ज्ञान स्वामी ने कथा का लाभ दिया था । इसके साथ दरिद्रनारायण की सेवा भी की गई थी । पूर्णिमा के दिन सरकारी अस्पताल में फूट, दूध, बिस्किट, रोगियो को दिया गया था । प्रत्येक पूनम को, शिवरात्री कृष्ण जन्माष्टमी तथा राम नवमी एवं श्री हरिप्रागट्योत्सव के दिन रोगियों की

विशेष सेवा की जाती है।

कथा की पूर्णाहुति के प्रसंग पर मूली मंदिर के पूर्व महंत तथा वर्तमान में मूली मंदिर की स्कीम कमेटी के सदस्य शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी तथा शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी उपस्थित रहकर सभी को यथोचित प्रेरणा दिये थे।(श्री ज्ञानवल्लभदास)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन पेन्सीलवेनिया (वडतालधाम) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री नरनारायणदेव देश अमदावाद अन्तर्गत इन्टरनेशनल श्री स्वामिनारायण ओर्गेनाईझेशन (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका के पेन्नील वेनिया स्टेट में एलन टाउन में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के पू. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी के सम्पूर्ण मार्गदर्शन से तथा अमेरिका इसो के प्रत्येक चेप्टरों के हरिभक्तों के सहयोग से भव्य मंदिर का निर्माण हुआ, जिस में श्री नरनारायणदेव तथा लक्ष्मीनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया गया।

ता. २७-७-१५ सोमवार को मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में सुदंर कथा का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर प.भ. भीखाभाई के निवास स्थान से पोथी का पूजन करके संत-हरिभक्तों के विशाल समूह के साथ गाजते वाजते हुए पोथीयात्रा नूतन मंदिर में गई थी। पारायण वक्ता जेतलपुरधाम के शा.स्वा. भक्तिनन्दनदासजीने कथा का आरंभ किया था। दूसरे दिन श्रीकृष्ण जन्मोत्सव भव्य ढंग से मनाया गया था। साथ में संत-हरिभक्तोंने रास खेलकर सभी को आनंदित किया था। तीसरे दिन देह शुद्धि का सुन्दर कार्यक्रम रखा गया था।

ता. ३१-७-१५ शुक्रवार को प्रात: ८-०० बजे से १२-०० तक तथा सायंकाल ३-०० बजे से ७-०० बजे तक विष्णुयाग का कार्यारंभ हुआ, जिस में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से उद्घाटन किया गया। जिस में हरिभक्त भी साथ में पूजन में भाग लिये थे। युवति बहनो द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रखा गया था।

ता. १-८-१५ शनिवार को विष्णुयाग कथापारायण के साथ श्री हनुमानजी, गणपतिजी, श्री शिव परिवार तथा सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से की गयी थी। रात्रि में ८-०० से १०-०० बजे तक श्री जगदीशभाई त्रिवेदी, हास्यकला के द्वारा कार्यक्रम भी किया गया था। इस प्रसंग पर सेवा करनेवाले भक्तों को सन्मानित भी किया गया था।

ता. २-८-१५ अगस्त को प्रात: सभी मूर्तियों का पूजन अभिषेक प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया। सभी दर्शन का लाभ लिये थे। बाद में मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा भी संपन्न की गयी थी। मूर्ति प्रतिष्ठा के दर्शन का लाभ लेकर भक्तजन जयजयकार करने लगे। प्रसादी की कंठी, प्रसादीकी साडी की बोली बोली गई थी। इसका भी लाभ भक्तोंने लिया था। बाद में ठाकुरजी की श्रृंगार आरती, अन्नकूट आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुई थी। इस भव्य मंदिर के निर्माण में श्री भीखाभाई, श्री अरविंदभाई, श्री मुकेशभाई, श्री सुरेशभाई, श्री रमेशभाई, श्री दिलीपभाई, श्री जयेन्द्रभाई तथा आई.एस.एस.ओ. चेप्टरों के छोटे०बडे हरिभक्त तन-मन-धन से सेवा की थी।

प्रासंगिक सभा में पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा आई.एस.एस.ओ. चेप्टरों के संतो के प्रवचन के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। (प्रहलादभाई पटेल - न्युजर्सी)

इटास्का (शिकागो) श्री स्वामिनारायण मंदिर का १७ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कांकरीया) तथा पुजारी शांतिप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर का १७ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ।

पाटोत्सव के अन्तर्गत १२-०० घन्टे की महामंत्र धुन के बाद श्री विदुरनीति नवान्ह पारायण, पोथीयात्रा, श्रीहरियाग, महापूजा ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट, ब्लड डोनेशन केम्प, स्वा. हरिकेशवदासजी के वचनामृत दृष्टांत सी.डी. का विमोचन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री वरद् हाथों किया गया था। सर्व प्रथम विदूरनीति नवान्ह पारायण स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी गुरु महंत गुरुप्रसाददासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। इस प्रसंग पर लुईवील से शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, शा. व्रजवल्लभदासजी इत्यादि संत पधारे थे।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान श्री रमेशभाई आर. मरफतिया तथा अ.सौ. ज्योत्सनाबहन पटेल थी। सह यजमान प.भ. विष्णुभाई तथा भारतीबहन पटेल, प.भ. कान्तिभाई कमलाबहन पटेल (छत्रपुरा) प.भ. जयंतीभाई काशीलाल शाह, प.भ. कमलेसभाई कोकिलाबहन इत्यादि परिवार तथा पारायण के मुख्य यजमान श्री भावेशभाई रघुबहन गांधी, श्री जिज्ञेशभाई तेजलबहन, सहयजमान श्री विठ्ठलभाई कमलाबहन पटेल, अभिषेक के मुख्य यजमान श्री रितेशभाई बिनलबहन अन्नकूट के यजमान डाह्याभाई जसुमतीबहन पटेल सह यजमान अंकितभाई प्रज्ञाबहन ठक्कर थी। एम.पी. ३सीडी के यजमान प.भ. रमेशभाई मारफतिया परिवार था। जिस की तरफ से सभी भक्तों को सीडी भेंट में दी गई थी। इश प्रसंग में संत तथा छोटे-बड़े हरिभक्त सुंदर सेवा किये थे।(वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन का ९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन के ९ वें पाटोत्सव के अन्तर्गत ता. १९-८-१५ से २३-८-१५ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ

था।

ता. १९-८-१५ को प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । बालकों ने सुन्दर कार्यक्रम करके प.पू. महाराजश्री को प्रसन्न किया था । बालिकाओं ने प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के वरद् हाथों से पुरस्कार प्राप्त किया था । इसो चेप्टरो से आये हुए शिकागो, बायरन, इत्यादि मंदिरों के महंतोने आचार्य-देव की महिमा समझाई थी ।

ता. १३-८-१५ को प्रातः पाटोत्सव विधिसंपन्न हुई । मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्रीके वरद् हाथों से किया गया । बाद में समूह महापूजा में अनेक भक्तों ने भाग लिया था । कथा की पूर्णाहुति प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से हुई थी । प.पू. बड़े महाराजश्री का भक्तों ने पूजन किया तथा बहनों ने प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी का पूजन की थी । यजमानो का भी सन्मान किया गया था । बोस्टन के मेयर श्री पधारकर प.पू. बड़े महाराजश्री का दर्शन करके खूब प्रभावित हुये थे । आगामी दशाब्दी महोत्सव करने की उद्घोषणा की गई थी ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक का ५४१ से भी अधिक यजमान बनकर धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त किये थे ।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने भाईयों को तथा बहनो को प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने आशीर्वाद दिया था । श्री अरविंदभाई पटेल (प्रेसि.) ने आभार विधिकी थी । सभा संचालन प.भ. ज्ञानेश धोलकियानी की थी । छोटे-बड़े सभी हरिभक्तोंने तथा स्वयं सेवकों ने उत्तम सेवा की थी । अन्त में सभी महाप्रसाद लेकर आगामी दशाब्दी महोत्सव मनाने का संकल्प लिये थे ।

सभी आयोजन मंदिर के महंत शा.स्वा. विवेकसागरदासजी (नाथद्वारा) तथा कमेटी के सदस्यों ने किया था । (साधु विवेकसागरदास तथा कमेटी के सदस्य - बोस्टन)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड न्युजीलेन्ड में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की बहनों ने सुन्दर झूले को सजाकर प्रभु को झुलाया था । समूह महापूजा में ओकलेन्ड तथा हेमिल्टन के हरिभक्तों ने महापूजा में बैठने का लाभ लिया था । गुरुपूर्णिमा के शुभ दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के तसवीर का पूजन किया गया था । श्रावण मास में शिवजी का पूजन किया गया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल तथा अ.सौ. डॉ. रंजनाबहन पटेल, जयंतभाई, सुरेशभाई, अतुलभाई, बिपीनभाई, महेशभाई इत्यादि सभी भक्त मिलकर नेपाल भूकंपग्रस्तों के लिये करीब १५ हजार डोलर की सहायता की थी । जिसे मंदिर के माध्यम से भेंजा गया है । (तुषारभाई शास्त्री)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

भाउपुरा (ता. कलोल) : प.भ. कांतिभाई शंकरदास पटेल ता. १०-८-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

बलोल (भाल) : सिंदव पुतलिबा गोविंदभा (उम्र ८० वर्ष) (जिसके घर श्रीहरि का चरणारविंद है) ता. ८-८-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

बालवा (जि. गांधीनगर) : प.भ. चौधरी रामाजी हालाजी (उम्र ७० वर्ष) ता. २१-७-१५को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

कालीयाणा : श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठारी वयोवृद्ध - सेवा निष्ठ भूदरभाई करसनभाई मोरी की धर्मपत्नी शांताबहन भूधरभाई मोरी (उम्र ८२ वर्ष) ता. ९-८-१५को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

महादेवनगर (अमदावाद) : प.भ. सतीषभाई पटेल (महादेवनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पुजारी मावजीभा के भतीजे) (उम्र २८ वर्ष) ता. ३१-७-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

अम्बापुर : प.भ. मंडलभाई मगनभाई (वर्तमान-अमेरिका) ता. १७-८-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

अमदावाद : प.भ. कांतिभाई लालजीभाई कोटक ता. २०-८-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(૧) પવિત્ર શ્રાવણ માસ में नारायणघाट मंदिर में प्रसादी के शिवलिंग का पूजन करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री। (२) श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा द्वारा आयोजित ऋषिकेश में गंगा के किनारे गंगाजल से ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण का पान करते हुए संत-हरिभक्त।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) एलेन्टाउन (अमेरिका) वडतालधाम मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी ।(२) बोस्टन मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर घनश्याम महाराज का अभिषेक दर्शन ।(३) कोलोनिया मंदिर के १० वे पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप ।(४) शिकागो मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक ।(५) डिट्रोईट मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए संत-हरिभक्त ।(६) ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) मंदिर में झूलोत्सव का दर्शन ।

Praful Kharsani